# मयूरपंख

हिंदी पाठ्यपुस्तक

7

AUGMENTED REALITY
(Android Mobile App)
(See back cover for user guide)

हेल्प लाइन

Scanned with CamScanner

# 1

# कोई नहीं पराया

### कविता का सार

आज संसार में आपसी झगड़े, भेद-भाव और अलगाव इतने अधिक बढ़ गए हैं कि इनसान अपनों को भी पराया समझता है। यदि इनसान अपने मन से संकोच और अपने मन से हर तरह की नासमझी को हटाकर देखे कि कोई भी पराया नहीं है, सब अपने हैं तो पूरी पृथ्वी एक परिवार की तरह लगेगी।

### चिंतन की कड़ियाँ

जब हम स्वर्ग की कल्पना, ऊँच-नीच आदि की जंजीरों में जकड़ देते हैं तो यह पूरा संसार ही हमें पराया लगने लगता है। परंतु, जब हम अपने आप को स्वर्ग के इन सब बंधनों से मुक्त कर लेते हैं तथा खुले हृदय से सबको अपना कहते हैं तो पूरा संसार ही अपना लगने लगता है।

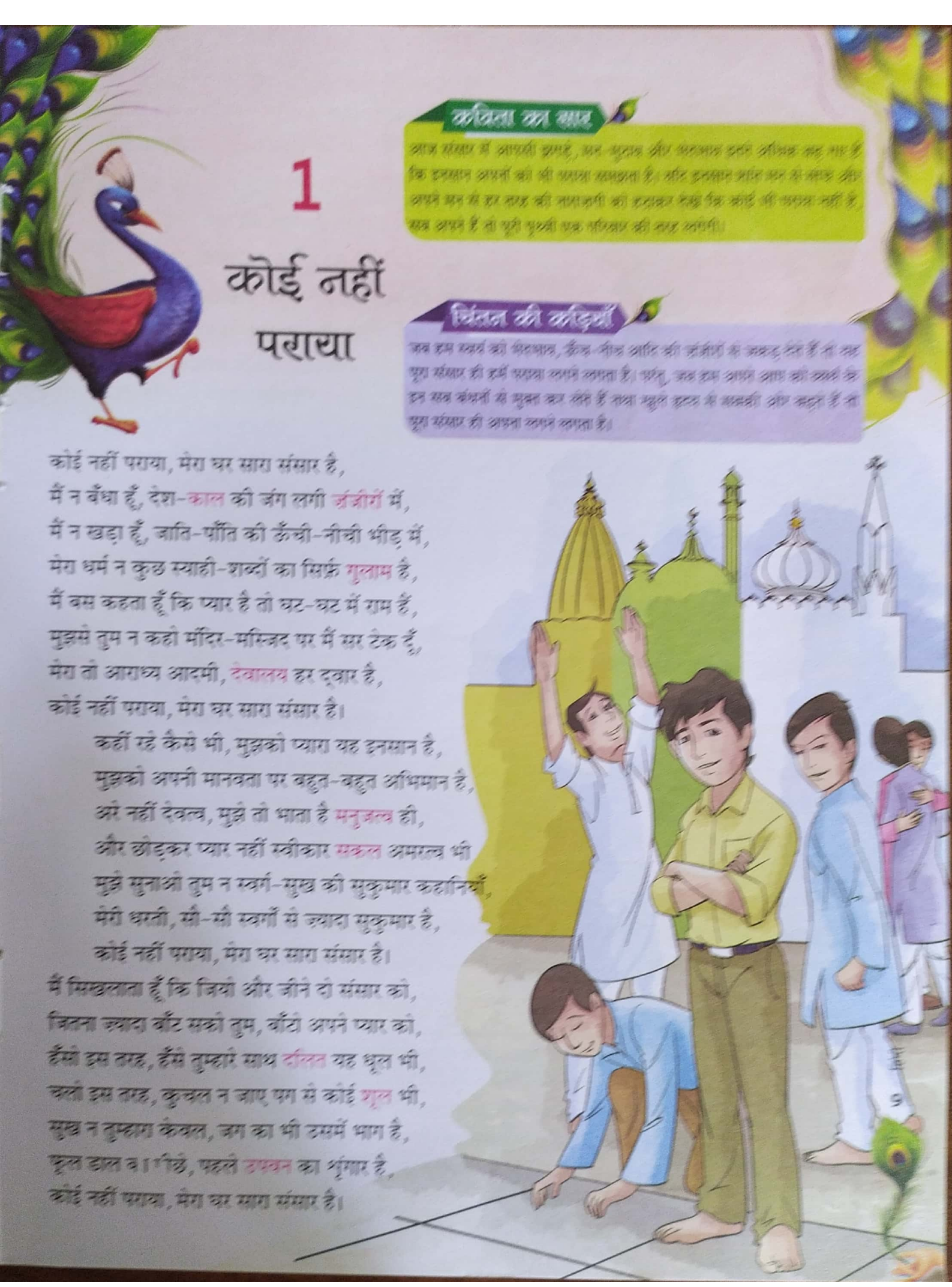

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है,
मैं न बँधा हूँ, देश-काल की जंग लगी जंजीरों में,
मैं न खड़ा हूँ, जाति-पाँति की ऊँची-नीची भीड़ में,
मेरा धर्म न कुछ स्याही-शब्दों का सिर्फ़ गुलाम है,
मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट-घट में राम हैं,
मुझसे तुम न कहो मंदिर-मस्जिद पर मैं सर टेक दूँ,
मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है,
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

कहीं रहे कैसे भी, मुझको प्यारा यह इनसान है,
मुझको अपनी मानवता पर बहुत-बहुत अभिमान है,
अरे नहीं देवत्व, मुझे तो भाता है मनुजत्व ही,
और छोड़कर प्यार नहीं स्वीकार सकल अमरत्व भी
मुझे सुनाओ तुम न स्वर्ग-सुख की सुकुमार कहानियाँ,
मेरी धरती, सौ-सौ स्वर्गों से ज़्यादा सुकुमार है,
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

मैं सिखलाता हूँ कि जियो और जीने दो संसार को,
जितना ज़्यादा बाँट सको तुम, बाँटो अपने प्यार को,
हँसो इस तरह, हँसे तुम्हारे साथ दलित यह धूल भी,
चलो इस तरह, कुचल न जाए पग से कोई शूल भी,
सुख न तुम्हारा केवल, जग का भी उसमें भाग है,
फूल डाल से न तोड़ो, पहले उपवन का शृंगार है,
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

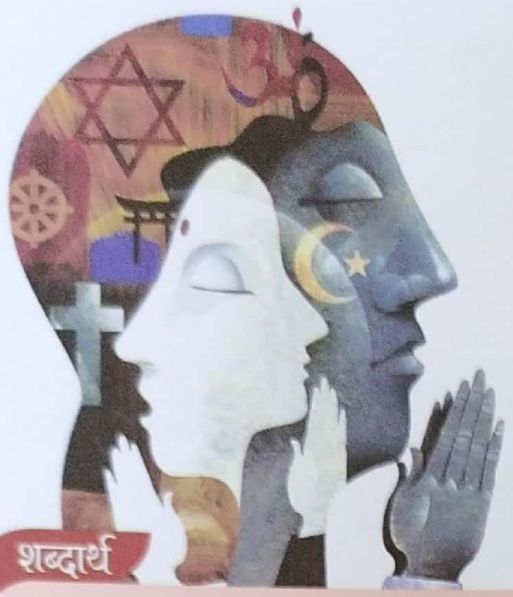

मुझे मिली है प्यास, विषमता का विष पीने के लिए,
मैं जनमा हूँ, नहीं स्वयंहित, जगहित जीने के लिए,
मुझे दी गई आग कि इस तम को मैं आग लगा सकूँ,
गीत मिले इसलिए कि जग की सारी पीड़ा गा सकूँ,
पूरे दर्दीले गीतों को तुम मत पहनाओ हथकड़ी,
मेरा दर्द नहीं मेरा है, सबका हाहाकार है,
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

–गोपालदास 'नीरज'

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| काल | – | समय | ज़ंजीर | – | बेड़ी, बाधा |
| गुलाम | – | दास | देवालय | – | मंदिर |
| मनुजत्व | – | मानवता | सकल | – | सारा |
| दलित | – | रौंदी या कुचली हुई | शूल | – | काँटा |
| उपवन | – | बगीचा | विषमता | – | ऊँच-नीच |
| स्वयंहित | – | अपना भला | जगहित | – | संसार का भला |
| दर्दीले | – | दर्द भरे | हथकड़ी | – | बंधन |

## ज्ञान मंजूषा

* किसी कार्य के प्रति आशान्वित होना आशावाद कहलाता है। 'नीरज' जी के गीतों में आशावाद की झलक सहज ही देखने को मिलती है।
* संस्कृत का श्लोक है–

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुंबकम्।।

**अर्थात्**– ओछी प्रवृत्ति वाले लोग ही मेरा-तेरा का जाप जपते हैं जबकि उदार चरित्र वाले लोगों के लिए सारा संसार ही उनका परिवार होता है।

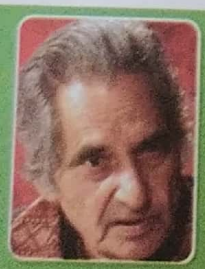

गोपालदास 'नीरज'
जन्म : 04-01-1925

## रचनाकार-परिचय

मानव प्रेम के अन्यतम गायक **गोपालदास सक्सेना 'नीरज'** का जन्म उत्तर प्रदेश के इटावा ज़िले के गाँव पुरावली में 4 जनवरी 1925 को हुआ था। बच्चन जी के बाद नई पीढ़ी को इनके काव्य ने बहुत प्रभावित किया। इन्होंने कई प्रसिद्ध फ़िल्मों के गीतों की रचना भी की थी। सन् 1991 में भारत सरकार ने इन्हें पद्मश्री तथा 2007 में पद्म भूषण से सम्मानित किया।

**प्रमुख कृतियाँ**– दर्द दिया, प्राणगीत, आसावरी, विभावरी, नीरज की पाती, दो गीत, फिर दीप जलेगा आदि।



Scanned with CamScanner

# अभ्यास

## कविता की समझ (Comprehension Skills)

- Listening and Writing Skills
- Oral Expression
- MCQs
- Fill in the Blanks
- Written Expression
  - Based on Passage
  - Short Answer Type Questions
  - Long Answer Type Questions

**1. श्रुतलेख**

स्याही मस्जिद आराध्य मनुजत्व शृंगार विषमता दर्दीला

### मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

**2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) कवि का आराध्य कौन है?

(ख) कवि किसकी कहानियाँ नहीं सुनना चाहते?

(ग) कवि को कैसी प्यास लगी है?

**3. सही उत्तर चुनकर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

(क) 'जितना बाँट सको तुम, बाँटो अपने _____ को।' इस काव्यांश में भरा जाएगा–

(अ) हार ◯ (ब) प्यार ◯ (स) मार ◯ (द) तार ◯

(ख) कवि को क्या भाता है?

(अ) मनुजत्व ◯ (ब) देवत्व ◯ (स) पशुत्व ◯ (द) भ्रातृत्व ◯

(ग) 'चलो इस तरह, कुचल न जाए पग से कोई _____ भी।' इस काव्यांश में भरा जाएगा–

(अ) फूल ◯ (ब) शूल ◯ (स) भूल ◯ (द) मूल ◯

(घ) कवि किसमें आग लगाना चाहता है?

(अ) घास में ◯ (ब) तम में ◯ (स) कागज़ में ◯ (द) झोंपड़ी में ◯

### लिखित प्रश्न (Written Questions)

**4. कविता की अधूरी पंक्तियाँ पूरी कीजिए–**

(क) कहीं रहे कैसे भी, _____

मुझको अपनी _____

(ख) हँसो इस तरह, _____

चलो इस तरह, _____

(ग) सुख न तुम्हारा केवल, _____

फूल डाल का पीछे, _____

**5. निम्नलिखित काव्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है,
मैं न बँधा हूँ, देश-काल की जंग लगी ज़ंजीरों में,
मैं न खड़ा हूँ, जाति-पाँति की ऊँची-नीची भीड़ में,
मेरा धर्म न कुछ स्याही-शब्दों का सिर्फ़ गुलाम है,



Scanned with CamScanner

मैं बस कहता हूँ कि प्यार है तो घट-घट में राम हैं,
मुझसे तुम न कहो मंदिर-मस्जिद पर मैं सर टेक दूँ,
मेरा तो आराध्य आदमी, देवालय हर द्वार है,
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

(क) कवि का घर कैसा है?
(ख) कवि का धर्म क्या है?
(ग) कवि कैसी जंजीरों में नहीं बँधना चाहता?
(घ) कवि को घट-घट में राम कैसे दिखते हैं?
(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए– 'मैं न खड़ा हूँ, जाति-पाँति की ऊँची-नीची भीड़ में।'

**6. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

**लघूत्तरीय प्रश्न** (Short Answer Type Questions)

(क) कवि को अपनी धरती किससे ज्यादा सुकुमार लगती है?
(ख) कवि का जन्म किसके लिए हुआ है?
(ग) चलते हुए हमें क्या सावधानी बरतनी चाहिए?
(घ) 'जियो और जीने दो' से कवि का क्या अभिप्राय है?

**दीर्घउत्तरीय प्रश्न** (Long Answer Type Questions)

(क) **सप्रसंग व्याख्या कीजिए–**

मुझे मिली है प्यास, विषमता का विष पीने के लिए,
मैं जनमा हूँ, नहीं स्वयंहित, जगहित जीने के लिए,
मुझे दी गई आग कि इस तम को मैं आग लगा सकूँ,
गीत मिले इसलिए कि जग की सारी पीड़ा गा सकूँ,
पूरे दर्दीले गीतों को तुम मत पहनाओ हथकड़ी,
मेरा दर्द नहीं मेरा है, सबका हाहाकार है,
कोई नहीं पराया, मेरा घर सारा संसार है।

(ख) कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए।

## मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) 'मनुष्य को स्वहित की चाह न रखकर जगहित की सोचनी चाहिए' कविता के इस भाव पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

(ख) वर्तमान समय में हमें अधिकतर झूठे और धोखेबाज इनसान मिलते हैं। ऐसे समय में कवि की कविता क्या सीख प्रदान करती है? सच्चा इनसान कौन है? अपने विचार प्रकट करते हुए बताइए कि समाज में बदलाव लाने के लिए हमें क्या करना चाहिए?



Scanned with CamScanner

## भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

- Similar Sound Words
- Opposite Words
- Synonyms
- Word Formation

**1. मिलते-जुलते तुक वाले शब्द पाठ से चुनकर लिखिए–**

(क) कर्म _____ (ख) विद्यालय _____

(ग) भूल _____ (घ) कराया _____

(ङ) दरबार _____ (च) मुकाम _____

**2. उचित विलोम शब्द चुनकर लिखिए–**

विष दानवता शूल नरक आज़ाद अपना

(क) पराया _____ (ख) मानवता _____

(ग) अमृत _____ (घ) फूल _____

(ङ) गुलाम _____ (च) स्वर्ग _____

**3. दिए गए शब्दों के सही पर्याय पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

(क) संसार – जग ◯ स्वर्ग ◯

(ख) आदमी – औरत ◯ मनुष्य ◯

(ग) फूल – सुगम ◯ पुष्प ◯

(घ) उपवन – बगीचा ◯ सुमन ◯

**4. ध्यान दीजिए–**

क् + ष = क्ष – क्षमा

त् + र = त्र – त्रिशूल

श् + र = श्र – श्रमिक

ज् + ञ = ज्ञ – ज्ञान

श् + ऋ = शृ – शृंगार

**इनके प्रयोग वाले दो-दो शब्द लिखिए–**

(क) क्ष _____ _____

(ख) त्र _____ _____

(ग) ज्ञ _____ _____

(घ) श्र _____ _____

(ङ) शृ _____ _____

## गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- Verbal Literacy
- Logical Explanation
- Creative Work
- Collection
- Digital Literacy

1. 'परोपकार से किया गया छोटा कार्य भी महान कार्यों की श्रेणी में आ जाता है।' आपके जीवन में भी कभी ऐसा अनुभव हुआ होगा। ऐसे अनुभव से कक्षा को अवगत कराइए।
2. 'आदर्शों की बातें करना तो बहुत आसान है, परंतु उनपर चलना बहुत कठिन है।' क्या आप इस बात से सहमत हैं? तर्कसहित उत्तर दीजिए।
3. आशावादी पंक्तियों व उद्धरणों को एकत्रित कीजिए और 'ए - 3' आकार के कागज़ पर लिखकर कक्षा में लगाइए।
4. सकारात्मक दृष्टिकोण से संबंधित कविताओं या लेखों का संकलन कीजिए। पुस्तकालय से अथवा www.anubhuti.com से सहायता ले सकते हैं।



Scanned with CamScanner

# 2

# परीक्षा

## पाठ का भाव

मानवीय गुणों के आगे शैक्षिक उपाधियों का कोई मूल्य नहीं है। मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित इस कहानी में दीवान सुजानसिंह द्वारा आयोजित ऐसी ही परीक्षा का वर्णन है। इस परीक्षा में महत्व व्यक्ति की डिग्री को नहीं बल्कि उसके मानवीय गुणों; जैसे– साहस, दया, आत्मबल, सहानुभूति इत्यादि को दिया गया है।

## चिंतन की कड़ियाँ

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। ऐसी मान्यता है कि ईश्वर मनुष्य की परीक्षा लेते हैं, इसी कारण उसे समय-समय पर अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। आपके जीवन में भी कभी ऐसा समय आए तो उससे हार मानकर थककर नहीं बैठना चाहिए, अपितु ईश्वर द्वारा ली जा रही परीक्षा में स्वयं को उत्तीर्ण करने का प्रयास करना चाहिए।

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की, "दीनबंधु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी ज़िंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।"

राजा साहब अपने अनुभवशील, नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब न माने तो हारकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रिसायत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

दूसरे दिन देश के प्रसिद्ध पत्रों में यह विज्ञापन निकला कि देवगढ़ के लिए एक सुयोग्य दीवान की ज़रूरत है। जो सज्जन अपने को इस पद के योग्य समझें वे वर्तमान दीवान सरदार सुजानसिंह की सेवा में उपस्थित हों। यह ज़रूरी नहीं है कि वे ग्रेजुएट हों, मगर हृष्ट-पुष्ट होना आवश्यक है, मंदाग्नि के मरीज़ को यहाँ तक का कष्ट उठाने की कोई ज़रूरत नहीं। एक महीने तक उम्मीदवारों के रहन-सहन,

Scanned with CamScanner

आचार-विचार की देखभाल की जाएगी। विद्या का कम परंतु कर्तव्य का अधिक विचार किया जाएगा। जो महाशय इस परीक्षा में पूरे उतरेंगे, वे इस उच्च पद पर सुशोभित होंगे।

इस विज्ञापन ने सारे मुल्क में हलचल मचा दी। ऐसा ऊँचा पद और किसी प्रकार की क़ैद नहीं। केवल नसीब का खेल है। सैकड़ों आदमी अपना-अपना भाग्य परखने के लिए चल खड़े हुए। देवगढ़ में नए-नए और रंग-बिरंगे मनुष्य दिखाई देने लगे। प्रत्येक रेलगाड़ी से उम्मीदवारों का एक मेला-सा उतरता। कोई पंजाब से चला आता था, कोई मद्रास (चेन्नई) से। कोई नए फ़ैशन का प्रेमी, कोई पुरानी सादगी पर मिटा हुआ। पीढ़ियों और मौलिकियों को भी अपने-अपने भाग्य की परीक्षा करने का अवसर मिला। बेचारे सनद के नाम पर रोया करते थे, यहाँ उसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। रंगीन एमामे, चोगे और नाना प्रकार के अँगरखे और कनटोप देवगढ़ में अपनी सज-धज दिखाने लगे। लेकिन, सबसे विशेष संख्या ग्रेजुएटों की थी, क्योंकि सनद की क़ैद न होने पर भी सनद से अपना तो ढका रहता था।

सरदार सुजानसिंह ने इन महानुभावों के आदर-सत्कार का बड़ा अच्छा प्रबंध कर दिया था। लोग अपने-अपने कमरों में बैठे हुए रोज़ेदार मुसलमानों की तरह महीने के दिन गिना करते थे। हर व्यक्ति अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता था। मिस्टर 'अ' नौ बजे दिन तक सोया करते थे, आजकल वे बगीचे में टहलते हुए उषा का दर्शन करते थे। मि. 'ब' को हुक्का पीने की लत थी, पर आजकल बहुत रात गए किवाड़ बंद करके अँधेरे में सिगार पीते थे। मि. 'द', 'स' और 'ज' से उनके घरों पर नौकरों की नाक में दम था, लेकिन ये सज्जन आजकल 'आप' और 'जनाब' के बग़ैर नौकरों से बातचीत नहीं करते थे। महाशय 'क' नास्तिक थे, हक्सले के उपासक, मगर आजकल उनकी धर्मनिष्ठा देखकर मंदिर के पुजारी को पदच्युत हो जाने की शंका लगी रहती थी। मि. 'ल' को किताबों से घृणा थी, परंतु आजकल वे बड़े-बड़े ग्रंथ देखने-पढ़ने में डूबे रहते थे। जिससे बात कीजिए, वही नम्रता और सदाचार का देवता बना मालूम देता था। शर्मा जी घड़ी रात से ही वेदमंत्र पढ़ने लगते थे। मौलवी साहब को नमाज़ और तिलावत के सिवा और कोई काम न था। लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है। लेकिन, मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा है।

एक दिन नए फ़ैशनवालों को सूझी कि आपस में हॉकी का खेल हो जाए। यह प्रस्ताव हॉकी के मँजे हुए खिलाड़ियों ने पेश किया। यह भी तो आखिर एक विद्या है। इसे क्यों छिपा रखें? संभव है, कुछ हाथों की सफ़ाई ही काम कर जाए। चलिए, तय हो गया, फ़ील्ड बन गया। खेल शुरू हो गया और गेंद किसी दफ़्तर के अर्दलियों की तरह ठोकरें खाने लगी।

रियासत देवगढ़ में यह खेल बिलकुल निराली बात थी। पढ़े-लिखे भले-मानुस लोग शतरंज और ताश जैसे गंभीर खेल खेलते थे। दौड़-कूद के खेल बच्चों के खेल समझे जाते थे।

खेल बड़े उत्साह से ज़ारी था। धावे के लोग जब गेंद को लेकर तेज़ी से उड़ते तो ऐसा जान पड़ता था कि कोई लहर बढ़ती चली आती है। लेकिन, दूसरी ओर से खिलाड़ी इस बढ़ती हुई लहर को इस तरह रोक लेते थे कि मानो लोहे की दीवार हो।



Scanned with CamScanner

संध्या तक यही धूमधाम रही। लोग पसीने से तर हो गए। खून की गरमी आँखों और चेहरे से झलक रही थी। हाँफते-हाँफते बेदम हो गए लेकिन हार-जीत का निर्णय न हो सका। अँधेरा हो गया था। इस मैदान से ज़रा दूर हटकर एक नाला था। उस पर कोई पुल न था, पथिकों को नाले में से चलकर आना पड़ता था। खेल अभी बंद ही हुआ था और खिलाड़ी लोग दम ले रहे थे कि एक किसान अनाज से भरी हुई गाड़ी लिए हुए उस नाले में आया। लेकिन कुछ तो नाले में कीचड़ था और कुछ उसकी चढ़ाई इतनी ऊँची थी कि गाड़ी ऊपर न चढ़ सकती थी। वह कभी बैलों को ललकारता, कभी पहियों को हाथ से धकेलता, लेकिन बोझ अधिक था और बैल कमज़ोर। गाड़ी ऊपर न चढ़ती और चढ़ती भी तो कुछ दूर चढ़कर फिर खिसककर नीचे पहुँच जाती। किसान बार-बार ज़ोर लगाता और बार-बार झुँझलाकर बैलों को मारता, लेकिन गाड़ी उभरने का नाम न लेती। बेचारा इधर-उधर निराश होकर ताकता मगर वहाँ कोई नज़र न आता। गाड़ी को अकेले छोड़कर कहीं जा भी न सकता था। बड़ी विपत्ति में फँसा हुआ था। इसी बीच खिलाड़ी हाथों में डंडे लिए घूमते-घामते उधर से निकले। किसान ने उनकी तरफ़ सहमी हुई आँखों से देखा, परंतु किसी से मदद माँगने का साहस न हुआ। खिलाड़ियों ने भी उसको देखा मगर किन आँखों से, जिनमें सहानुभूति न थी। उनमें स्वार्थ था, मद था, मगर उदारता और भाईचारे का नाम भी न था।

लेकिन, उसी समूह में एक ऐसा मनुष्य था जिसके हृदय में दया थी और साहस था। आज हॉकी खेलते हुए उसके पैरों में चोट लग गई थी। लँगड़ाता हुआ धीरे-धीरे चला आता था। अकस्मात् उसकी निगाह गाड़ी पर पड़ी। ठिठक गया। उसे किसान की सूरत देखते ही सब बातें ज्ञात हो गईं। डंडा एक किनारे रख दिया। कोट उतार डाला और किसान के पास जाकर बोला, "मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ?"

किसान ने देखा, एक गठे हुए बदन का लंबा आदमी सामने खड़ा है। झुककर बोला, "हुज़ूर, मैं आपसे कैसे कहूँ?"

Scanned with CamScanner

युवक ने कहा, "मालूम होता है, तुम यहाँ बड़ी देर से फँसे हुए हो। अच्छा, तुम गाड़ी पर जाकर बैलों को साधो, मैं पहियों को धकेलता हूँ, अभी ऊपर चढ़ जाएगी गाड़ी।"

किसान गाड़ी पर जा बैठा। युवक ने पहियों को ज़ोर लगाकर उठाया। कीचड़ बहुत ज़्यादा था। वह घुटने तक ज़मीन में गड़ गया, लेकिन हिम्मत न हारी। उसने फिर ज़ोर लगाया, उधर किसान ने बैलों को ललकारा। बैलों को सहारा मिला, हिम्मत बँध गई, उन्होंने कंधे झुकाकर एक बार ज़ोर लगाया तो गाड़ी नाले के ऊपर थी।

किसान युवक के सामने हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। बोला, "महाराज, आपने आज मुझे उबार लिया, नहीं तो सारी रात यहीं बैठना पड़ता।"

युवक ने हँसकर कहा, "अब मुझे कुछ इनाम देते हो?"

किसान ने गंभीर भाव से कहा, "नारायण चाहेंगे तो दीवानी आपको ही मिलेगी।"

युवक ने किसान की तरफ़ गौर से देखा। उसके मन में एक संदेह हुआ, कहीं ये सुजानसिंह तो नहीं हैं! आवाज़ मिलती है, चेहरा-मोहरा भी वही लगता है। किसान ने भी उसकी ओर तीव्र दृष्टि से देखा। शायद उसके दिल के संदेह को भाँप गया। मुसकराकर बोला, "गहरे पानी में पैठने से ही मोती मिलता है।"

महीना पूरा हुआ और चुनाव का दिन आ पहुँचा। उम्मीदवार लोग प्रातःकाल से अपनी-अपनी किस्मत का फ़ैसला सुनने के लिए उत्सुक थे। दिन काटना पहाड़ हो गया। प्रत्येक के चेहरे पर आशा और निराशा के रंग आते-जाते थे। नहीं मालूम, आज किसके नसीब जागेंगे? न जाने किस पर लक्ष्मी की कृपादृष्टि होगी?

संध्या समय राजा साहब का दरबार सजाया गया। शहर के रईस और धनाढ्य, राजकर्मचारी और दरबारी तथा दीवानी के उम्मीदवारों का समूह, सब रंग-बिरंगी सज-धज बनाए दरबार में आ विराजे। उम्मीदवारों के कलेजे धड़क रहे थे।

तब सरदार सुजानसिंह ने खड़े होकर कहा, "दीवानी के उम्मीदवार महाशयो! मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है, उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। इस पद के लिए ऐसे पुरुष की आवश्यकता थी जिसके हृदय में दया हो और साथ-साथ आत्मबल। हृदय वह जो उदार हो, आत्मबल वह जो विपत्ति का वीरता के साथ सामना करे और इस रियासत के सौभाग्य से हमको ऐसा पुरुष मिल गया। ऐसे गुणवाले संसार में कम हैं और जो हैं वे कीर्ति और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं। मैं रियासत को पंडित जानकीनाथ-सा दीवान पाने पर बधाई देता हूँ।"

रियासत के कर्मचारियों और रईसों ने जानकीनाथ की तरफ़ देखा। उम्मीदवार दल की आँखें उधर उठीं, मगर उन आँखों में सत्कार था, इन आँखों में ईर्ष्या।

सरदार साहब ने फिर फ़रमाया, "आप लोगों को यह स्वीकार करने में कोई आपत्ति न होगी कि जो पुरुष स्वयं ज़ख्मी होकर एक गरीब किसान की भरी हुई गाड़ी को दलदल से निकालकर नाले के ऊपर चढ़ा दे, उसके हृदय में साहस, आत्मबल और उदारता का वास है। ऐसा आदमी गरीबों को कभी न सताएगा। उसका संकल्प दृढ़ है, जो उसके चित्त को स्थिर रखेगा। वह चाहे धोखा खा जाए, परंतु दया और धर्म से कभी न हटेगा।"

—मुंशी प्रेमचंद



Scanned with CamScanner

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| नेकनामी | – | अच्छे काम के लिए प्रसिद्धि | मंदाग्नि | – | भूख न लगना, अपच |
| सनद | – | ज्ञान, प्रमाण पत्र | ग्रेजुएट | – | स्नातक (बी.ए.) पास |
| धर्मनिष्ठा | – | धर्म में विश्वास | पदच्युत | – | अपने पद से हटना |
| तिलावत | – | पवित्र भाव से पढ़ना, अनुपालन | अप्रेंटिस | – | प्रशिक्षु, कार्यक्षेत्र में पूर्वाभ्यासी |
| मद | – | घमंड | चित्त | – | दिमाग, मन |

## ज्ञान मंजूषा

* मुंशी प्रेमचंद हिंदी साहित्य जगत में 'उपन्यास सम्राट' के नाम से जाने जाते हैं। साथ ही, कहानी के विकास में भी इनका अपना विशेष योगदान है।
* प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों व उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की सहज झलक मिलती है।

मुंशी प्रेमचंद

जन्म : 31-07-1880

मृत्यु : 08-10-1936

### रचनाकार-परिचय

**मुंशी प्रेमचंद** का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के समीप लमही ग्राम में हुआ था। इन्हें हिंदी साहित्य में कथा सम्राट व उपन्यास सम्राट के रूप में जाना जाता है। इनका बचपन का नाम धनपत राय श्रीवास्तव था। इन्होंने 'हंस' और 'जागरण' जैसी पत्रिकाओं का संपादन किया। इन्होंने उर्दू से अपना लेखन आरंभ किया। आज के युग में कथा-कहानी व उपन्यास की चर्चा तो जैसे प्रेमचंद के बिना पूरी ही नहीं होती।

**प्रमुख कृतियाँ–** गोदान, सेवासदन, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, रंगभूमि आदि उपन्यास। 'मानसरोवर' चार भागों में उपलब्ध इनका कहानी संग्रह है।

# अभ्यास

## पाठ की समझ (Comprehension Skills)

* Listening and Writing Skills
* Oral Expression
* MCQs
* Whose Said to Whom
* Written Expression
  - — Based on Passage
  - — Short Answer Type Questions
  - — Long Answer Type Questions

**1. श्रुतलेख**

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| नीतिकुशल | ग्रेजुएट | मंदाग्नि | अँगरखा | धर्मनिष्ठा |
| अप्रेंटिस | सहानुभूति | कृपादृष्टि | सत्कार | आत्मबल |

**मौखिक प्रश्न** (Oral Questions)

**2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) कहानी में 'बूढ़ा जौहरी' व 'बगुलों में हंस' किसके लिए प्रयुक्त किया गया है?

(ख) देवगढ़ रियासत में कौन-सा नया खेल खेला गया?

(ग) बैलगाड़ी कहाँ फँसी थी?

(घ) देवगढ़ रियासत का नया दीवान कौन बना?



Scanned with CamScanner

3. पाठ के अनुसार सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–

(क) देवगढ़ रियासत के बूढ़े दीवान का नाम था–

(अ) सज्जनसिंह ○ (ब) सुजानसिंह ○ (स) अंजानसिंह ○ (द) रघुराजसिंह ○

(ख) निम्नलिखित में से कौन-सा खेल देवगढ़ रियासत में प्रचलित नहीं था?

(अ) शतरंज ○ (ब) ताश ○ (स) दौड़ ○ (द) टेनिस ○

(ग) गहरे पानी में पैठने पर क्या मिलते हैं?

(अ) पानी ○ (ब) मोती ○ (स) हीरे ○ (द) सीप ○

(घ) किसान की गाड़ी में भरा था–

(अ) नमक ○ (ब) दाल ○ (स) अनाज ○ (द) भूसा ○

(ङ) दीवान पद के लिए किस बीमारी से पीड़ित रोगियों को आने की इजाज़त नहीं थी?

(अ) बुखार ○ (ब) पेट दर्द ○ (स) मंदाग्नि ○ (द) आंत्र ज्वर ○

## लिखित प्रश्न (Written Questions)

4. किसने, किससे कहा?

(क) कहीं भूल-चूक हो जाए तो बुढ़ापे में दाग लगे। _____

(ख) मैं तुम्हारी गाड़ी निकाल दूँ? _____

(ग) हुज़ूर, मैं आपसे कैसे कहूँ? _____

(घ) मैंने आप लोगों को जो कष्ट दिया है,
उसके लिए मुझे क्षमा कीजिए। _____

(ङ) अब मुझे कुछ इनाम देते हो? _____

5. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

जब रियासत देवगढ़ के दीवान सरदार सुजानसिंह बूढ़े हुए तो परमात्मा की याद आई। जाकर महाराज से विनय की, "दीनबंधु! दास ने श्रीमान की सेवा चालीस साल तक की, अब मेरी अवस्था भी ढल गई, राजकाज सँभालने की शक्ति नहीं रही। कहीं भूल-चूक हो जाए, तो बुढ़ापे में दाग लगे। सारी ज़िंदगी की नेकनामी मिट्टी में मिल जाए।"
राजा साहब अपने अनुभवशील, नीतिकुशल दीवान का बड़ा आदर करते थे। बहुत समझाया, लेकिन जब दीवान साहब न माने तो हारकर उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली, पर शर्त यह लगा दी कि रिसायत के लिए नया दीवान आप ही को खोजना पड़ेगा।

(क) सरदार सुजानसिंह अपना पद क्यों छोड़ना चाहते थे?

(ख) राजा सुजानसिंह का आदर क्यों करते थे?

(ग) सुजानसिंह ने महाराज से क्या प्रार्थना की?

(घ) किस रियासत के लिए दीवान का चुनाव होना था?

(अ) राजगढ़ ○ (ब) देवगढ़ ○ (स) फतेहगढ़ ○ (द) रामगढ़ ○

(ङ) किसे अपनी नेकनामी मिट्टी में मिल जाने की चिंता थी?

(अ) जानकीनाथ को ○ (ब) दीवानसिंह को ○ (स) सुजानसिंह को ○ (द) जयसिंह को ○



Scanned with CamScanner

6. **नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

**लघूत्तरीय प्रश्न** (Short Answer Type Questions)

(क) राजा ने सुजानसिंह के समक्ष क्या शर्त रखी?

(ख) दीवान के पद के लिए आवश्यक योग्यताएँ क्या थीं?

(ग) सरदार सुजानसिंह ने पंडित जानकीनाथ को दीवान क्यों नियुक्त किया?

(घ) किसान के साथ क्या घटना घटी?

**दीर्घउत्तरीय प्रश्न** (Long Answer Type Questions)

(क) लेखक ने लिखा है 'हर कोई अपने जीवन को अपनी बुद्धि के अनुसार अच्छे रूप में दिखाने की कोशिश करता है।' क्यों?

(ख) पंडित जानकीनाथ व अन्य उम्मीदवारों के व्यक्तित्व में क्या अंतर था?

(ग) इस कहानी के द्वारा लेखक हमें क्या संदेश देना चाहता है?

## मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) मनुष्य का स्वभाव है दूसरों की गलतियाँ देखना और दूसरों पर गलतियाँ मढ़कर स्वयं बच निकलना। कहानी में भी बैल के फँसने पर लोगों की यही प्रतिक्रिया थी। क्या आप इसे सही मानते हैं? विस्तारपूर्वक अपने विचार लिखिए।

(ख) केवल सपने देखने और लक्ष्य निर्धारित कर देने से जीवन में मंज़िल नहीं मिलती। हमारा प्रत्येक सपना, प्रत्येक लक्ष्य अपने लिए अपेक्षित त्याग, परिश्रम, एकाग्रता और समर्पण चाहता है। आपका लक्ष्य क्या है? उसे पाने के लिए आप क्या कर रहे हैं और क्या कर सकते हैं?

## भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

- Pair Words
- Prefix
- Tatsam and Tadbhav Words
- Opposite Words
- Noun
- Adjective
- Idioms

1. जब एक शब्द अपने ही जैसे अपने पर्याय या विलोम शब्द के साथ जोड़े के रूप में प्रयुक्त होता है, तो उसे **युग्म-शब्द** कहते हैं; जैसे– भूल-चूक, रहन-सहन, आचार-विचार, हृष्ट-पुष्ट आदि।

**निम्नलिखित शब्दों में एक अन्य शब्द जोड़कर युग्म-शब्द बनाइए–**

(क) दौड़ – _____ (ख) आमोद – _____ (ग) उचित – _____

(घ) दिन – _____ (ङ) पूछ – _____ (च) सीधा – _____

2. 'सु' उपसर्ग लगने से अर्थ में सकारात्मक व साक्षेप वृद्धि होती है; जैसे– सु + लभ अर्थात् आसानी से प्राप्त। 'सुभोग्य' में 'सु' उपसर्ग प्रयुक्त हुआ है।

**'सु' उपसर्ग लगाकर चार शब्द बनाइए।**

3. **तत्सम शब्द**– संस्कृत के अनेक शब्दों का हिंदी में उसी रूप में प्रयोग किया जाता है। इन्हें **तत्सम शब्द** कहते हैं। कर्ण, सर्प, मयूर, पत्र, अक्षि आदि तत्सम शब्द हैं।

**तद्भव शब्द**– हिंदी में ऐसे शब्द भी प्रयोग में लाए जाते हैं जिनका मूल रूप संस्कृत होता है, पर हिंदी में इनका रूप बदल जाता है। इन्हें **तद्भव शब्द** कहते हैं। कान, साँप, मोर, पत्ता और आँख तद्भव शब्द हैं इनका मूल रूप संस्कृत है, परंतु हिंदी में इनमें परिवर्तन आया है।

**कहानी में आए पाँच तत्सम और पाँच तद्भव शब्द लिखिए।**



Scanned with CamScanner

4. **विलोम शब्द लिखिए–**

(क) सज्जन _____ (ख) आदर _____

(ग) नास्तिक _____ (घ) वीरता _____

(ङ) स्वीकार _____ (च) धर्म _____

5. **निम्नलिखित वाक्यों में आए संज्ञा शब्दों को रेखांकित कीजिए तथा उनके भेद लिखिए–**

(क) उसपर कोई पुल न था। _____

(ख) कहीं बुढ़ापे में दाग न लग जाए। _____

(ग) दरबार सजाया गया। _____

(घ) कहीं यह सुजानसिंह तो नहीं? _____

(ङ) उनकी उदारता प्रशंसनीय है। _____

6. विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं–

(अ) मूलावस्था (ब) उत्तरावस्था (स) उत्तमावस्था

मूलावस्था से उत्तरावस्था व उत्तमावस्था में बदलने के लिए क्रमशः 'तर' व 'तम' का प्रयोग किया जाता है।

**निम्नलिखित शब्दों की उत्तरा व उत्तमावस्था लिखिए–**

(क) श्रेष्ठ _____ _____

(ख) योग्य _____ _____

(ग) अधिक _____ _____

(घ) लघु _____ _____

7. प्रायः हम मुहावरे व लोकोक्तियों में भ्रमित हो जाते हैं। वस्तुतः मुहावरे वाक्यांश होते हैं जबकि लोकोक्ति पूरा वाक्य। मुहावरे की स्वतंत्र सत्ता नहीं होती जबकि लोकोक्ति प्रयोग की दृष्टि से स्वतंत्र होती है, अर्थात् इनका प्रयोग ज्यों-का-त्यों किया जा सकता है।

**निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिए एवं वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

(क) नाक में दम होना (ख) हाथ की सफ़ाई (ग) मिट्टी में मिलना

(घ) पेट में चूहे कूदना (ङ) अपने पैरों पर खड़ा होना (च) कीचड़ में कमल होना

## गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- Conversation
- Debate Competition
- Creative Writing
- Project Work

1. कक्षा में किसी ऐसी घटना का उल्लेख कीजिए, जब संकट पड़ने पर आपने किसी की सहायता की हो अथवा संकटकाल में किसी ने आपकी सहायता की हो।
2. जीवन में 'नैतिक मूल्यों की उपयोगिता' विषय पर कक्षा में वाद-विवाद कीजिए।
3. क्या आप अपने राज्य से अलग कभी किसी अन्य राज्य में घूमने गए हैं? वहाँ आपको क्या-क्या अच्छा लगा तथा किन क्षेत्रों में आपने सुधार की आवश्यकता अनुभव की? लिखिए।
4. आजकल कई बाल पत्रिकाएँ बाज़ार में उपलब्ध हैं। हिंदी में छपने वाली कुछ बाल पत्रिकाओं की सूची बनाइए। चित्र व जानकारी सहित प्रोजेक्ट तैयार कीजिए।



Scanned with CamScanner

# 3

# कामचोर

## पाठ का सार

इस्मत चुगताई अपनी सहज भाषा शैली में आम जीवन की घटनाओं को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त थीं। उनके द्वारा लिखित 'कामचोर' नामक यह कहानी अत्यंत मनोरंजक है। इस कहानी में लेखिका ने बाल-सुलभ व्यवहार का सजीव चित्रण किया है। कथा शिल्प की दृष्टि से पात्रों की सजीवता अद्भुत है। ऐसा प्रतीत होता है कि सब कुछ सामने ही घटित हो रहा हो।

## चिंतन की कड़ियाँ

हममें से कई बच्चे काम से जी चुराकर अपने कर्तव्यों से दूर भागते हैं। माता-पिता अपना संपूर्ण जीवन अपने बच्चों के पालन-पोषण में समर्पित कर देते हैं। हमारा कर्तव्य है कि कामचोर न बनकर यथासंभव उनकी सहायता करने का प्रयास करें।

बड़ी देर से वाद-विवाद के बाद यह तय हुआ कि सचमुच नौकरों को निकाल दिया जाए। आखिर, ये मोटे-मोटे बच्चे किस काम के हैं! हिलकर पानी नहीं पीते। इन्हें अपना काम खुद करने की आदत होनी चाहिए। कामचोर कहीं के!

"तुम लोग कुछ काम नहीं करते। इतने सारे हो और सारा दिन ऊधम मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।"

और, सचमुच हमें खयाल आया कि हम आखिर काम क्यों नहीं करते। हिलकर पानी पीने में अपना क्या खर्च होता है? इसलिए तुरंत हिल-हिलाकर पानी पीना शुरू किया।

हिलने में धक्के भी लग जाते हैं और हम किसी के दबैल तो थे नहीं कि कोई धक्का दे, तो सह जाएँ। लीजिए, पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध शुरू हो गया। सुराहियाँ उधर लुढ़कीं, मटके इधर गए। कपड़े भीगे, सो अलग।

'यह भला काम करेंगे! गधे कहीं के।' अम्मा ने निश्चय किया।

"करें कैसे नहीं! देखो जी! जो काम नहीं करेगा, उसे रात का खाना हरगिज़ नहीं मिलेगा। समझे!"

यह लीजिए, बिलकुल शाही फ़रमान जारी हो रहे हैं।

"हम काम करने को तैयार हैं। काम बताया जाए।" हमने दुहाई दी।

"बहुत-से काम हैं, जो तुम कर सकते हो।

Scanned with CamScanner

मिसाल के लिए, यह दरी कितनी मैली हो रही है। आँगन में कितना कूड़ा पड़ा है। पेड़ों में पानी देना है और भाई, मुफ़्त तो यह काम करवाए नहीं जाएँगे। तुम सबको तनख्वाह भी मिलेगी।'' अब्बा मियाँ ने कुछ काम बताए और दूसरे कामों का हवाला भी दिया, ''माली को तनख्वाह मिलती है। अगर सब बच्चे मिलकर पानी डालें, तो...''

''खुदा के लिए नहीं। घर में बाढ़ आ जाएगी।'' अम्मा ने याचना की। फिर तनख्वाह के सपने देखते हुए हम लोग काम पर तुल गए।

एक दिन फ़र्शी दरी पर बहुत-से बच्चे जुट गए और चारों ओर से कोने पकड़कर झटकना शुरू किया। दो-चार ने लकड़ियाँ लेकर धुआँधार पिटाई शुरू कर दी।

''ऐं! तुम पर खुदा की मार!'' सारा घर धूल से अट गया। खाँसते-खाँसते सब बेदम हो गए। सारी धूल जो दरी पर थी, वह और जो कुछ फ़र्श पर थी, वह सबके सिरों पर जम गई। नाकों और आँखों में घुस गई। बुरा हाल हो गया सबका। मार-मारकर हम लोगों को आँगन में निकाला गया। वहाँ हम लोगों ने फ़ौरन झाड़ू देने का फ़ैसला किया। झाड़ू क्योंकि एक थी और तनख्वाह लेने के उम्मीदवार बहुत, इसलिए क्षण भर में झाड़ू के पुर्जे उड़ गए। जितनी सींकें जिसके हाथ पड़ीं, वह उन्हीं से उलटे-सीधे हाथ मारने लगा। ज़मीन कम और एक-दूसरे की नंगी टाँगें ज़्यादा झाड़ी गईं। नतीज़ा यह कि सींकें चलीं। आँखें फूटते-फूटते बचीं। अम्मा ने सिर पीट लिया। भई, यह बुज़ुर्ग काम करने दें, तो इनसान काम करे। अब ज़रा-ज़रा सी बात पर थप्पड़ों की बारिश होने लगे, तो बस, हो चुका काम!

असल में झाड़ू देने से पहले ज़रा-सा पानी छिड़क लेना चाहिए। बस, यह खयाल आते ही तुरंत दरी पर पानी छिड़का गया। एक तो वैसे ही धूल से अटी हुई थी। पानी पड़ते ही सारी धूल कीचड़ बन गई।

अब सब मज़दूर आँगन से भी मार-मारकर निकाले गए। तय हुआ कि पेड़ों को पानी दिया जाए। बस, सारे घर की बालटियाँ, लोटे, तसले, भगौने, पतीलियाँ लूट ली गईं। जिन्हें ये चीज़ें भी न मिलीं, वे डोंगे-कटोरे और गिलास ही ले भागे।

अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहाँ भी वह घमासान मचा कि क्या मज़ाल जो एक बूँद पानी भी किसी के बरतन में आ सके। ठूसम-ठास! किसी बालटी पर पतीला और पतीले पर लोटा और भगौने और डोंगे। पहले तो धक्के चले। फिर कुहनियाँ और उसके बाद बरतनों से ही एक-दूसरे पर हमला कर दिया गया।

स्पष्ट है कि भारी बरतन वाले तो हथियार उठाते रह गए। कटोरों और डोंगों वाली फ़ौज ने गोमड़े डाल दिए सिरों पर। फ़ौरन बड़े भाइयों, बहनों, मामुओं और दमदार मौसियों, फूफियों की कुमुक भेजी गई, जिन्होंने नीम की पतली-पतली छड़ियों से वह सड़ाके लगाए कि फ़ौज मैदान में हथियार फेंककर पीठ दिखा गई।

इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड़ में लथपथ हो गए, जिन्हें नहलाकर कपड़े बदलवाने के लिए नौकरों की वर्तमान संख्या काफ़ी नहीं थी। इसलिए पास के बँगलों से नौकर आए और चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से हम नहलवाए गए।

हम लोग कायल हो गए कि सचमुच यह सफ़ाई का काम अपने बस की बात नहीं और न पेड़ों की देखभाल हमसे हो सकती है। कम-से-कम मुर्गियाँ ही बंद कर दें।



Scanned with CamScanner

बस, शाम ही से जो बाँस, छड़ी हाथ पड़ी, लेकर मुर्गियाँ हाँकने लगे। "चल दड़बे, दड़बे!"
पर साहब, मुर्गियों को भी किसी ने हमारे विरुद्ध भड़का रखा था। ऊट-पटाँग इधर-उधर कूदने लगीं। दो मुर्गियाँ खीर के प्यालों से, जिनपर आया चाँदी के वर्क लगा रही थी, दौड़ती-फड़फड़ाती हुई निकल गईं। तूफ़ान गुजरने के बाद पता चला कि प्याले खाली हैं और सारी खीर दीदी के कामदानी के दुपट्टे और ताज़े धुले सिर पर लगी हुई है। एक बड़ा-सा मुर्गा अम्मा के खुले हुए पानदान में फाँद पड़ा और कत्थे-चूने में लुथड़े हुए पंजे लेकर नानी अम्मा की सफ़ेद दूध जैसी चाँदी पर छापे मारता हुआ निकल गया।
एक मुर्गी दाल की पतीली में छपाका मारकर भागी और सीधी जाकर मोरी में इस तेज़ी से फिसली कि सारी कीचड़ मौसी जी के मुँह पर पड़ी, जो बैठी हुई हाथ-मुँह धो रही थीं। इधर सारी मुर्गियाँ बेनकेल का ऊँट बनी हुई दौड़ रही थीं। एक भी दड़बे में जाने को राज़ी न थी।
इधर, किसी को सूझी कि बकरा-ए-ईद के लिए जो भेड़ें आई हुई हैं, लगे हाथों उन्हें भी दाना खिला दिया जाए। दिन भर की भूखी भेड़ें दाने का सूप देखकर जो सबकी सब झपटीं, तो भागकर जाना कठिन हो गया। लश्टम-पश्टम तख्तों पर चढ़ गईं। बस भेड़-चाल मशहूर है। उनकी नज़र तो बस दाने के सूप पर जमी हुई थी। पलंगों को फलाँगती, बरतन लुढ़काती साथ-साथ चढ़ गईं।
तख्त पर बानो दीदी के दहेज का दुपट्टा फैला हुआ था, जिस पर गोखरो, चंपा और सलमा-सितारे रखकर बड़ी दीदी मुगलानी बुआ को कुछ बता रही थीं। भेड़ें निस्संकोच सबको रौंदती अपने खुरों में किरणें, गोखरो लचका और सलमा-सितारे उलझातीं, जॉर्जट के दुपट्टे रौंदती, मेंगनों का छिड़काव करती हुई दौड़ गईं।
जब तूफ़ान गुज़र चुका तो ऐसा लगा, जैसे जर्मनी की सेना टैंकों और बमबारों सहित उधर से छापा मारकर गुज़र गई हो। जहाँ-जहाँ से सूप गुज़रा, भेड़ें शिकारी कुत्तों की तरह गंध सूँघती हुई हमला करती गईं।
हज्जन माँ एक ओर पलंग पर दुपट्टे से मुँह ढाँक सो रही थीं। उनपर जो भेड़ें दौड़ीं तो न जाने वह सपने में किन महलों की सैर कर रही थीं, दुपट्टे में उलझी हुई, 'मारो-मारो' चीखने लगीं।
इतने में भेड़ें सूप को भूलकर तरकारीवाली की टोकरी पर टूट पड़ीं। वह दालान में बैठी मटर की फलियाँ तोल-तोलकर रसोइये को दे रही थी। वह अपनी तरकारी का बचाव करने के लिए सीना तानकर उठ गई। आपने कभी भेड़ों को मारा होगा, तो अच्छी

Scanned with CamScanner

तरह देखा होगा कि बस, ऐसा लगता है जैसे रुई के तकिये को कूट रहे हों। भेड़ को चोट ही नहीं लगती। बिलकुल यह समझकर कि आप उससे मज़ाक कर रहे हैं, वह आप ही पर चढ़ बैठेगी। ज़रा-सी देर में भेड़ों ने तरकारी, छिलकों सहित अपने पेट की कड़ाही में झोंक दी।

इधर यह प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे। इतनी बड़ी फ़ौज थी, जिसे रात का खाना न मिलने की धमकी मिल चुकी थी। वे चार भैंसों का दूध दुहने पर जुट गए। धुली-बेधुली बालटी लेकर आठ हाथ चार थनों पर पिल पड़े। भैंस एकदम जैसे चारों पैर जोड़कर उठी और बालटी को लात मारकर दूर जा खड़ी हुई।

तय हुआ कि भैंस की अगाड़ी-पिछाड़ी बाँध दी जाए और फिर काबू में लाकर दूध दुह लिया जाए। बस, झूले की रस्सी उतारकर भैंस के पैर बाँध दिए गए। पिछले दो पैर चाचा जी की चारपाई के पायों से बाँध, अगले दो पैरों को बाँधने की कोशिश जारी थी कि भैंस चौकन्नी हो गई। छूटकर जो भागी तो पहले चाचा जी समझे कि शायद कोई सपना देख रहे हैं। फिर जब चारपाई पानी के ड्रम से टकराई और पानी छलककर गिरा तो समझे कि आँधी-तूफ़ान में फँसे हैं। साथ में भूचाल भी आया हुआ है। फिर जल्दी ही उन्हें असली बात का पता चल गया और वह पलंग की दोनों पाटियाँ पकड़े बच्चों और भैंसों को साँड़ की तरह छोड़ देने वालों को बुरा-भला सुनाने लगे।

यहाँ बड़ा मज़ा आ रहा था। भैंसें दौड़ी जा रही थीं और पीछे-पीछे चारपाई और उसपर बिलकुल राजा इंद्र की तरह बैठे हुए थे चाचा जी।

ओहो! एक भूल हो गई अर्थात् कटड़ा तो खोला ही नहीं, इसलिए तत्काल कटड़ा खोल दिया गया।

तीर निशाने पर बैठा और कटड़े की ममता में व्याकुल होकर भैंस ने अपने खुरों को ब्रेक लगा दिए। कटड़ा तत्काल जुट गया। दुहने वाले तुरंत गिलास-कटोरे लेकर लपके, क्योंकि बालटी तो छपाक से गोबर में जा गिरी थी। एक कटड़ा और चार बच्चे। भैंस फिर बागी हो गई।

कुछ दूध ज़मीन पर और कपड़ों पर, दो-चार धारें गिलास-कटोरों पर भी पड़ गईं। बाकी कटड़ा पी गया। वह सब कुछ एक मिनट के तीन-चौथाई में हो गया।

घर में तूफ़ान उठ खड़ा हुआ। ऐसा लगता था, जैसे सारे घर में मुर्गियाँ, भेड़ें, टूटे हुए तसले, बालटियाँ, लोटे, कटोरे और बच्चे बिखरे पड़े थे।

अम्मा ने सिर पीट लिया। दीदी चौखट पर बैठकर रोने लगी। बड़ी कठिनाई से शांति कायम करके भेड़ें, भैंस और बच्चे बाहर किए गए। मुर्गियाँ बाग में हँकाई गईं। शोक करती हुई तरकारीवाली के आँसू पोंछे गए और अम्मा आगरा जाने के लिए सामान बाँधने लगीं।

"या तो बच्चा-राज कायम कर लो या मुझे ही रख लो। नहीं तो मैं चली मायके।" अम्मा ने चुनौती दे दी, "मुए बच्चे हैं कि लुटेरने..."

और अब्बा ने सबको कतार में खड़ा करके पूरी बटालियन का कोर्ट मार्शल कर दिया, "अगर किसी बच्चे ने घर की किसी चीज़ को हाथ लगाया तो बस, रात का खाना बंद हो जाएगा।"

यह लीजिए! इन बुज़ुर्गों को किसी करवट शांति नहीं। हमलोगों ने भी निश्चय कर लिया कि अब चाहे कुछ भी हो जाए, हिलकर पानी भी नहीं पीएँगे।

–इस्मत चुगताई



Scanned with CamScanner

## शब्दार्थ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| फ़रमान | – | आदेश | मिसाल | – | उदाहरण |
| याचना | – | प्रार्थना, विनती | कुमुक | – | अतिरिक्त सेना |
| धींगामुश्ती | – | छीना-झपटी, धक्का-मुक्की | दड़बा | – | मुर्गियों का आवास-स्थल |
| प्रलय | – | विनाश | कटड़ा | – | भैंस का बच्चा |
| बटालियन | – | सेना, पलटन | कोर्ट मार्शल | – | फ़ौजी अदालत में न्याय हेतु पेशी |

## ज्ञान मंजूषा

* सन् 1968 में इस्मत चुगताई ने बच्चों की एक फ़िल्म 'जवाब आएगा' का निर्देशन भी किया था। इसके अतिरिक्त ये फ़िल्म पटकथा, गीत लेखन आदि से भी जुड़ी रहीं।
* 'गर्म हवा' जो कि एम॰ एस॰ सत्यु की अत्यंत भावप्रवण फ़िल्म है, इस्मत चुगताई की ही कहानी पर आधारित है।
* कोर्ट मार्शल एक विशेष प्रकार की सैन्य-सज़ा की प्रणाली है। आमतौर पर यह काफ़ी कड़ी सज़ा मानी जाती है।

इस्मत चुगताई

जन्म : 21-08-1915

मृत्यु : 24-10-1991

### रचनाकार-परिचय

उर्दू साहित्य की यशस्वी कथा लेखिका **इस्मत चुगताई** का जन्म 21 अगस्त 1915 को उत्तर प्रदेश प्रांत के बदायूँ ज़िले में हुआ था। इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से बी॰ ए॰, बी॰ एड॰ तक की शिक्षा प्राप्त की। इन्होंने कई नगरपालिका विद्यालयों में अधीक्षक के रूप में कार्यभार सँभाला। जोधपुर के राजमहल गर्ल्स स्कूल की प्रधानाध्यापिका भी रहीं। इन्हें उर्दू साहित्य में विशिष्ट योगदान हेतु 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। उर्दू साहित्य की इस यशस्वी लेखिका का निधन 24 अक्तूबर 1991 में हो गया।

**प्रमुख कृतियाँ–** दिल की दुनिया, जंगली कबूतर, टेढ़ी लकीर, जिद्दी, दो हाथ कलियाँ, चोटें, छुई-मुई, एक बात आदि।

# अभ्यास

## पाठ की समझ (Comprehension Skills)

* Listening and Writing Skills
* Oral Expression
* MCQs
* Fill in the Blanks
* Written Expression
  - — Based on Passage
  - — Short Answer Type Questions
  - — Long Answer Type Questions

### 1. श्रुतलेख

| | | | |
|---|---|---|---|
| सुराहियाँ | तनख्वाह | कीचड़ | विरुद्ध |
| धींगामुश्ती | व्याकुल | बटालियन | निश्चय |

### मौखिक प्रश्न (Oral Questions)

**2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) कहानी में 'कामचोर' शब्द किनके लिए प्रयुक्त हुआ है और क्यों?

(ख) बच्चों से कार्य करवाने के लिए उन्हें क्या-क्या लालच दिया गया?

(ग) लालच का क्या परिणाम हुआ?

(घ) दरी झटकने पर धूल कहाँ कहाँ गई?



Scanned with CamScanner

3. पाठ के अनुसार सही विकल्प पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–

(क) वाद-विवाद के बाद तय हुआ कि

(अ) नौकरों को रख लिया जाए। ◯ (ब) किसी की परवाह न की जाए। ◯

(स) नौकरों के साथ मिलकर काम किया जाए। ◯ (द) नौकरों को निकाल दिया जाए। ◯

(ख) चाचा जी का आसन किस प्रकार का लग रहा था?

(अ) ब्रह्मा का ◯ (ब) विष्णु का ◯ (स) इंद्र का ◯ (द) शिवजी का ◯

(ग) आया किन पर चाँदी का वर्क लगा रही थी?

(अ) लड्डू पर ◯ (ब) बर्फ़ी पर ◯ (स) हलवे पर ◯ (द) खीर पर ◯

(घ) बच्चों ने किसके कोने पकड़कर झटकना शुरू किया?

(अ) चादर के ◯ (ब) कंबल के ◯ (स) दरी के ◯ (द) चटाई के ◯

## लिखित प्रश्न (Written Questions)

1. उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थान भरिए–

तनख्वाह दाने उधम विरुद्ध कीचड़

(क) इतने सारे हो और सारा दिन _____ मचाने के सिवा कुछ नहीं करते।

(ख) झाड़ू एक थी और _____ लेने के उम्मीदवार बहुत।

(ग) पानी पड़ते ही सारी धूल _____ बन गई।

(घ) मुर्गियों को भी किसी ने बच्चों के _____ भड़का रखा था।

(ङ) दिन भर की भूखी भेड़ें _____ का सूप देखकर झपट पड़ीं।

**निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

अब सब लोग नल पर टूट पड़े। यहाँ भी वह घमासान मचा कि क्या मज़ाल जो एक बूँद पानी भी किसी के बरतन में आ सके। ठूसम-ठास! किसी बालटी पर पतीला और पतीले पर लोटा और भगौने और डोंगे। पहले तो धक्के चले। फिर कुहनियाँ और उसके बाद बरतनों से ही एक-दूसरे पर हमला कर दिया गया।

स्पष्ट है कि भारी बरतन वाले तो हथियार उठाते रह गए। कटोरों और डोंगों वाली फ़ौज ने गोमड़े डाल दिए सिरों पर। फ़ौरन बड़े भाइयों, बहनों, मामुओं और दमदार मौसियों, फूफियों की कुमुक भेजी गई, जिन्होंने नीम की पतली-पतली छड़ियों से वह सड़ाके लगाए कि फ़ौज मैदान में हथियार फेंककर पीठ दिखा गई।

इस धींगामुश्ती में कुछ बच्चे कीचड़ में लथपथ हो गए, जिन्हें नहलाकर कपड़े बदलवाने के लिए नौकरों की वर्तमान संख्या काफ़ी नहीं थी। इसलिए पास के बँगलों से नौकर आए और चार आना प्रति बच्चा के हिसाब से हम नहलवाए गए।

(क) एक-दूसरे पर हमला किस प्रकार किया गया?

(ख) फौज़ पर सड़ाके किससे लगाए गए?

(ग) बच्चों को कैसे नहलाया गया?

(घ) सबसे पहले क्या चले?

(अ) बरतन ◯ (ब) कुहनियाँ ◯ (स) धक्के ◯ (द) हथियार ◯



Scanned with CamScanner

6. **नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

**लघूत्तरीय प्रश्न** (Short Answer Type Questions)

(क) भैंस के कटड़े को क्यों खोला गया?

(ख) नौकरों को घर से निकालने का फैसला क्यों लिया गया?

(ग) बच्चों को कौन-कौन से कार्य बताए गए?

(घ) अम्मा ने क्या चुनौती दी?

**दीर्घउत्तरीय प्रश्न** (Long Answer Type Questions)

(क) भेड़ों को दाना देना किस प्रकार एक मुसीबत सिद्ध हुआ?

(ख) भैंस के छूटकर भागने के बाद क्या दृश्य उपस्थित हुआ?

(ग) **आशय स्पष्ट कीजिए**– इधर प्रलय मची थी, उधर दूसरे बच्चे भी लापरवाह नहीं थे। इतनी बड़ी फ़ौज थी जिसे रात का खाना न मिलने की धमकी मिल चुकी थी।

(घ) अंत में अम्मा व अब्बा की क्या प्रतिक्रिया रही?

## मूल्य आधारित प्रश्न (Values Based Questions)

(क) हम अधिकारों की बात तो करते हैं परंतु कर्तव्यों के विषय में जागरूक नहीं रहते। क्या कर्तव्यबोध आवश्यक है? क्यों? अपने विचार लिखिए।

(ख) 'कामचोर' कहानी में सभी बच्चों में आपसी तालमेल और सहयोग की भावना का प्रतिपादन किया गया है परंतु उनमें कार्य को उचित ढंग से करने का ज्ञान नहीं था। यदि आप उन बच्चों में से एक होते तो कार्यों को उचित ढंग से करने के लिए क्या सुझाव देते व सावधानियाँ बरतते?

## भाषा की समझ (Language and Vocabulary Skills)

- Conjunction
- Repeated Word
- Pair Words
- Adjective and Substantive
- Phrases
- Abstract Noun

1. जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़ते हैं, उन्हें **समुच्चयबोधक शब्द** कहते हैं। इन्हें **योजक** भी कहा जाता है। इनके प्रमुख भागों में परिणामदर्शक अव्यय भी होता है, जो किसी परिणाम की ओर संकेत करता है; जैसे–
आज बहुत गरमी है इसलिए नहीं खेलूँगा।

**नीचे दिए गए योजक शब्दों से वाक्य बनाइए–**

(क) ताकि (ख) क्योंकि (ग) अतः (घ) तथापि (ङ) और

2. जब एक ही शब्द का प्रयोग दो बार करके युग्म बनाया जाता है तो उसे **पुनरुक्त शब्द** कहते हैं।

**निम्नलिखित पुनरुक्त शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए–**

(क) भागी-भागी (ख) मोटे-मोटे (ग) धीरे-धीरे (घ) लाल-लाल
(ङ) जाते-जाते



3. कुछ युग्म शब्दों का निर्माण दो परस्पर विलोम शब्दों को जोड़कर होता है जैसे– वाद-विवाद

**नीचे दिए गए शब्दों के उचित शब्द-युग्म पर सही ( ✓ ) का चिह्न लगाइए–**

(क) आगे – सामने ◯ पीछे ◯ पिछले ◯

(ख) उलटा – टेढ़ा ◯ सीधा ◯ पतला ◯

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| (ग) | दाएँ | – | बाएँ | ○ | जाएँ | ○ | खाएँ ○ |
| (घ) | रात | – | शाम | ○ | दिन | ○ | दुपहर ○ |
| (ङ) | सरदी | – | मौसम | ○ | बरसात | ○ | गरमी ○ |

4. जिस शब्द द्वारा विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेषण** तथा जिस शब्द की विशेषता बताई जाती है, उसे **विशेष्य** कहते हैं।

**निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण तथा विशेष्य शब्द छाँटिए–**

| | | विशेषण | विशेष्य |
|---|---|---|---|
| (क) | हमने मीठा पानी पीना शुरू कर दिया। | _____ | _____ |
| (ख) | सारे घर के बरतन फूट गए। | _____ | _____ |
| (ग) | मोटी भैंस जैसे ही छूटी कि हालत बिगड़ गई। | _____ | _____ |
| (घ) | पानी के मटकों के पास ही घमासान युद्ध शुरू हो गया। | _____ | _____ |
| (ङ) | यह दरी अब मैली हो गई है। | _____ | _____ |

5. **मुर्गी, भैंस, भेड़ आदि पर अनेक लोकोक्तियाँ हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं–**

(क) घर की मुर्गी दाल बराबर (ख) काला अक्षर भैंस बराबर

(ग) भेड़ चाल चलना (घ) दुधारू गाय की दो लातें भली

**इन लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए तथा अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए।**

6. जो शब्द किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण, धर्म, दशा, अवस्था, भाव आदि का बोध कराते हैं, उन्हें **भाववाचक संज्ञा** कहते हैं; जैसे– अच्छाई, लंबाई, ईमानदारी, बचपन, मानवता आदि।

कुछ संज्ञाएँ मूल रूप से भाववाचक होती हैं; जैसे– हिंसा, न्याय, सुख, दुख आदि। किंतु, कुछ भाववाचक संज्ञाएँ मूल शब्दों में प्रत्यय जोड़कर बनती हैं।

**नीचे ऐसे ही कुछ शब्द दिए गए हैं, आप उनमें प्रत्यय जोड़कर भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए–**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| (क) | पशु | _____ | (ख) | मीठा | _____ |
| (ग) | वीर | _____ | (घ) | शांत | _____ |
| (ङ) | पराया | _____ | (च) | एक | _____ |
| (छ) | घबराना | _____ | (ज) | हँसना | _____ |
| (झ) | देर | _____ | (ञ) | निकट | _____ |

## गतिविधियों के आयाम (Dimension of Activities)

- List Making
- Slogan Writing
- Creative Writing

1. आप घर के सदस्यों की किन-किन कामों में सहायता करते हैं। उन कार्यों की एक सूची तैयार कीजिए।
2. 'कर्म ही पूजा है' जैसे भाव व्यक्त करते हुए आदर्श वाक्य स्लोगन रूप में लिखिए।
3. आपके घरों में भी कोई बहुत पुराने बरतन हो सकते हैं। उनके नाम जानिए तथा नए बरतनों के साथ उनके संवाद की कल्पना कीजिए और लिखिए।



Scanned with CamScanner